विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

वर्ग अष्टम शिक्षिका सरिता कुमारी

विषय हिन्दी दिनांक 28-05-2020

प्रिय बच्चों।

सुप्रभात।

आज की अध्ययन सामग्री में नये पाठ की शुरुआत करने जा रही हूं।

पाठ 'दो' ***'मंत्र'*** कहानी पढ़ेंगे। जिसके कहानीकार ***मुंशी प्रेमचंद*** हैं।

मुंशी प्रेमचंद हिंदी साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर हैं।इनके जीवन से जुड़ी बातों को जानेंगे।

प्रेमचंद का जीवन परिचय

प्रेमचंद (31 जुलाई 1880 - 8 अक्टूबर 1936) हिन्दी और उर्दू के महानतम भारतीय लेखकों में से एक थे । मूल नाम धनपत राय श्रीवास्तव, प्रेमचंद को नवाब राय और मुंशी प्रेमचंद के नाम से भी जाना जाता है। उपन्यास के क्षेत्र में उनके योगदान को देखकर बंगाल के विख्यात उपन्यासकार शरतचंद्र चट्टोपाध्याय ने उन्हें उपन्यास सम्राट कहकर संबोधित किया था। प्रेमचंद ने

हिन्दी कहानी और उपन्यास की एक ऐसी परंपरा का विकास किया।जिसने पूरी सदी के साहित्य का मार्गदर्शन किया।

अपनी कहानी मंत्र में प्रेमचंद ने आदर्श और यथार्थ के मध्यम गहरा द्वंद्व प्रस्तुत किया है।अंत में आदर्श की विजय होती है। कहानी में भगत नामक पात्र अपने आदर्शात्मक व्यवहार से गहरी छाप छोड़ी है। वहीं कहानी के दूसरे पात्र डाक्टर चड्ढा का भी चरित्र कहानी के अंत में आदर्श को स्पर्श करता है।

आइए बच्चों! कहानी के पात्रों के नाम से परिचित हों।

<u>भगत ,</u>

डा.चड्ढा ,

कैलाश

मृणालिनी

सहायक पात्र में अन्य भी सम्मिलित हैं। जैसे भगत की पत्नी, गांव वाले , कैलाश के मित्र आदि।

आइए अब कहानी पढ़ें।

कहानी – 'मंत्र'

संध्या का समय था। डाक्टर चड्ढा गोल्फ खेलने के लिए तैयार हो रहे हैं। मोटर द्वार के

सामने खड़ी थी कि दो कहार एक डोली लिये आते दिखायी दिये। डोली के पीछे एक बूढ़ा लाठी टेकता चला आता था। डोली औषाधालय के सामने आकर रूक गयी। बूढ़े ने धीरे-धीरे आकर द्वार पर पड़ी हुई चिक से झाँका। ऐसी साफ-सुथरी जमीन पर पैर रखते हुए भय हो रहा था कि कोई घुड़क न बैठे। डाक्टर साहब को खड़े देख कर भी उसे कुछ कहने का साहस न हुआ।

डाक्टर साहब ने चिक के अंदर से गरज कर कहा—कौन है? क्या चाहता है?

डाक्टर साहब ने हाथ जोड़कर कहा— हुजूर बड़ा गरीब आदमी हूँ। मेरा लड़का कई दिन से.....

डाक्टर साहब ने सिगार जला कर कहा—कल

सबेरे आओ, कल सबेरे, हम इस वक्त मरीजों को नहीं देखते।

बूढ़े ने घुटने टेक कर जमीन पर सिर रख दिया और बोला—दुहाई है सरकार की, लड़का मर जायगा! हुजूर, चार दिन से आँखें नहीं.....

डाक्टर चड्ढा ने कलाई पर नजर डाली। केवल दस मिनट समय और बाकी था। गोल्फ-स्टिक खूँटी से उतारने हुए बोले—कल सबेरे आओ, कल सबेरे; यह हमारे खेलने का समय है।

बूढ़े ने पगड़ी उतार कर चौखट पर रख दी और रो कर बोला—हूजुर, एक निगाह देख लें। बस, एक निगाह! लड़का हाथ से चला जायगा हुजूर, सात लड़कों में यही एक बच रहा है, हुजूर। हम दोनों

आदमी रो-रोकर मर जायेंगे, सरकार! आपकी बढ़ती होय, दीनबंधु!

ऐसे उजड्ड देहाती यहाँ प्रायः रोज आया करते थे। डाक्टर साहब उनके स्वभाव से खूब परिचित थे। कोई कितना ही कुछ कहे; पर वे अपनी ही रट लगाते जायँगे। किसी की सुनेंगे नहीं। धीरे से चिक उठाई और बाहर निकल कर मोटर की तरफ चले। बूढ़ा यह कहता हुआ उनके पीछे दौड़ा— सरकार, बड़ा धरम होगा। हुजूर, दया कीजिए, बड़ा दीन-दुखी हूँ; संसार में कोई और नहीं है, बाबू जी!

मगर डाक्टर साहब ने उसकी ओर मुँह फेर कर

देखा तक नहीं। मोटर पर बैठ कर बोले—कल सबेरे आना।

बच्चों अध्ययन सामग्री को ध्यानपूर्वक पढ़ें और अपनी कॉपी में लिखें।

शेष अगले दिन....

धन्यवाद।